हुआ करती थी(वर्तमान के पंचायती राज का सिद्धांत यहीं से लिया गया है। राजराज प्रथम की मृत्यू के पश्चात उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1014ई0–1044ई0) शासक बना ।

राजेन्द्र प्रथम ने 1017 ई0 में सम्पूर्ण श्रीलंका को विजित कर यहां के शासक महिन्द्र मंचम को बन्दी बनाकर रखा । उसने पांडयों और चेरों के राज्यों को भी विजित किया था। राजेन्द्र प्रथम ने बंगाल के पाल शासक महीपाल को भी पराजित किर्या इस विजय के उपरात उसने 'गंगईकोंड' की उपाधि ग्रहध की।

★ **मध्यकालीन भारत के प्रमुख वंश एवं शासक**

नोट :– मोहम्मद बिन कासिम, भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम अरब मुस्लिम था जिसने सिन्ध पर मूल्तान को (712 ई. में)जीत लिया था। उस समय सिंध का शासक ब्राह्मणवंशी राजा दाहिर था। भारत पर प्रथम तर्क आक्रमण 986 ई में गजनी के शासक सुबुक्तगीन ने किया।

★ **महमूद गजनवी** –

महमूद गजनवी अपने पिता की मृत्यू के बाद 997 ई में गजनीके सिंहासन पर बैठा । महमूद गजनवी ने भारत पर 1001 ई से 1027 ई के बीच 17 आक्रमण किये । उसके आक्रमणों का उद्देश्य यहां के धन को लूटना एवं इस धन की सहायता से मध्य एशिया मे विशाल साम्राज्य की स्थापना करना था । उसने पंजाब के हिन्दुशाही वंश के शासक जयपाल को वैहिन्द की प्रथम लडाई (1001 ई.) में पराजित किया। वैहिन्द की द्वितीय (लडाई 1008 ई) मे उसने हिन्दुशाही वंश के ही आनन्दपाल को हराया । उसने थानेश्वर, कन्नौज, मथूरा, सोमनाथ, आदि नगरों का विध्वंश कर दिया था।

1025 ई में उसका सोमनाथ के शिव मन्दिर पर आक्रमण सबसे प्रसिद्ध है।

★ **मोहम्मद गौरी (1175ई0–1206ई0)** --

महमूद गजनवी के विपरीत, मोहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण का उद्देश्य भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना करना था। इस समय के दौरान दिल्ली पर चौहान वंश के पृथ्वीराज चौहान तृतीय का शासन था। मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच दो लडाईयाँ हुई– तराईन का प्रथम युद्ध(1191ई0)जिसमें गौरी की पराजय हुई तथा तराईन का द्वितीय युद्ध (1192ई0)जिसमें पृथ्वीराज की पराजय हुई ।

तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद मोहम्मद गौरी ने दिल्ली और अजमेर पर कब्जा कर भारत में मुस्लिम साम्राज्य की नींव डाल दी (गोरी को ही भारत में मुस्लिम साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।)

1194 ई. में चंदावर के युद्ध मे मोहम्मद गौरी ने कन्नौज के राजा जयचन्द को हराया। 1206 ई में गौरी, कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत का नेतृत्व सौंपकर अपने गृहप्रान्त की ओर चला। रास्ते मे कुछ विद्रोहियों ने अचानक हमला कर उसकी हत्या कर दी ।

★ **गुलाम वंश (1206 ई.–1290 ई.)** –

★ **कुतबुद्दीन (1206–1210 ई .)** –

पहले इसकी राजधानी लाहौर थी और बाद में दिल्ली बनी। इसने कुतुबमीनार का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया । कुतुबमीनार का नाम प्रसिद्ध सूफी सन्त ख्वाजा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया। इसने भारत की प्रथम मस्जिन (कुव्वत–उल–इस्लाम) दिल्ली में और अढाई दिन का झोंपडा अजमेर में बनवाया। इसकी मृत्यू लाहौर में चौगान(पोला)खेलते हुए घोडे से गिरकर हुई ।

★ **इल्तुतमिश (1210ई–1236ई)** –

इसने कुतुबमीनार को बनवाकर पूरा किया और राज्य को सुदृढ व स्थित बनाया । इल्तुतमिश ने इक्ता व्यवस्था शुरू की । इसके तहत सभी सैनिकों व गैर –सैनिकों अधिकारियों को नकद वेतन के बदले भूमि प्रदान की जाती थी । इल्तुतमिश ने चाँदी के 'टका' तथा ताँबे के जीतल का प्रचलन किया । उसने बगदाद के खलीफा से मान्यता प्राप्त की और ऐसा करने वाला वह प्रथम मुस्लिम शासक बना ।

उसने चालीस योय तुर्क सरदारों के एक दल चालीसा(चहलगानी) का गठन किया जिसने इल्तुतमिश की सफलताओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

★ **रजिया सुल्तान (1236ई–1240ई)** –

रजिया दिल्ली की प्रथम व अन्तिम मुस्लिम महिला शासक थी रजिया ने सैनिक वेशभूषा धारण की, परदा करना बन्द कर दिया और हाथी पर चढकर जनता के बीच जाना शुरू किया। रजिया ने अबीसिनिया निवासी एक गुलाम मलिक जलालुद्दीन याकूत को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया और उसे 'अमीर–ए– आखुर' अर्थात अश्वशाला प्रधान के पद पर नियुक्त कर दिया । इससे अमीर वर्ग (तुर्की अधिकारी) नराज हो गया । भटिण्डा के सूबेदार अल्तूनिया ने विद्रोह कर याकूत की हत्या कर दी तथा रजिया को बन्दी बना लिया । रजिया को कूटनीतिक दृष्टिकोण से अल्तूनिया से शादी करनी पडी ।

इसी बीच इल्तुतमिश के एक पुत्र बहरामशाह ने सता हथिया ली तथा भटिण्डा से दिल्ली आते वक्त अल्तुनिया व रजिया को हराकर उनका वध कर दिया ।

Preview from Notesale.co.uk
Page 9 of 21

❖ भारत में प्रथम टेलीग्राफ लाइन(कलकता से आगरा) 1853 ई. में शुरू हुई । शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया गया।

1857 की क्रान्ति

❖ **1857 ई0 के विद्रोह क प्रमुख केन्द्र व प्रमुख विद्रोही नेता**

केन्द्र	विद्रोही नेता	विद्रोह की तिथत	उन्मूलन के सैन्य अधिकारी	उन्मूलन की तिथि
दिल्ली	बहादूर शाह जफर, बख्त खाँ	11 मई 1857 ई.	निकलसन, हडसन	20 सितम्बर 1857 ई
कानपूर	नाना साहब, तात्यां टोपे	5 जून 1857 ई.	कॉलिन कैम्पबेल	दिसम्बर 1857 ई.
लखनऊ	बेगम हजरत महल, बिरजिस कादिर	4 जून 1857 ई.	कॉलिन कैम्पबेल	31 मार्च 1858 ई.
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून 1857 ई	जनरल ह्युरोज	17 जून 1858 ई
जगदीशपुर	कुंवरसिंह, अमरसिंह	12 जून 1858 ई	विलियम टेलर	दिसम्बर 1858 ई
फैजाबाद	मौलवी अहमदूल्ला	जून 1857 ई	जनरल रेनॉर्ड	5 जून 1858 ई
इलाहाबाद	लियाकत अली	जून 1857 ई	कर्नल नील	1858 ई
बरेली	खान बहादूर	जूप 1857 ई	विसेण्ट आयर	1858 ई

भारत में सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन

❖ **ब्रह्म समाज**– ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय द्वारा 20 अगस्त, 1828 ई को कलकता में की गयी। जिसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा, बहु विवाह , वैश्यागमन, जातिवाद, अस्पृस्यता आदि को समाप्त करना था राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा माना जाता है। कालान्तर में देवेन्द्रनाथ टैगोर (1818ई.–1905 ई .) ने ब्रह्म समाज को आगे बढाया । इनके द्वारा ही केशवचन्द्र सेन को ब्रह्मसमाज का आचार्य नियुक्त किया गया।

❖ **आर्य सामाज** – आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा 1875 ई में बम्बई में की गयी । इन्हौने अपने उपदेशों में मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद,पशुबलि, श्राद्ध, तन्त्र, जन्त्र झूठे कर्मकाण्ड आदि की आलोचना की तथा पूनः 'वेदों की और चलो' का नारा दिया। इनके विचारों का संकलन इनकी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता` । सिकी रचना इन्हौनें हिन्दी में की थी।

❖ **रामकृष्ण मिशन** – सर्वप्रथम इस मिशन की स्थापना 1897 ई में स्वामी विवेकानन्द द्वारा कलकता में की गयी। रामकृष्ण आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे। रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार–प्रसार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानन्द (नरेन्द्र नाथ दत्त) को जाता है। 1839 ई में स्वामी विवेकानन्द ने शिकागों में हुई धर्म संसद में भाग लेकर पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति व दर्शन में अवगत कराया था।

❖ **थियोसोफिकल सोसाइटी** –थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 ई में मैडम ब्लावात्सकी एवं कर्नल अल्काट द्वारा न्यूयॉर्क में की गयी। जनवरी 1882 ई में वे भारत आये तथा मद्रास में अडयार के निकट मुख्यालय स्थापित किया भारत में इसे व्यापक रूप से फैलाने का श्रेय श्रीमती ऐनी बिसेन्ट को दिया जाता है।

❖ **यंग बंगाल आन्दोलन** – भारत में यंग बंगाल आन्दोलन प्रारम्भ करने का श्रेय हेनरी विवियन डेरोजियो को है। एंग्लो–इण्डियन डेरोजियों कलकता में 'हिन्दू कॉलेज' के अध्यापक थे । हेनरी विवियन डेरोजियों को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

❖ **अलीगढ आन्दोलन** – अलीगढ आन्दोलन, सर सैय्यद अहमद खाँ द्वारा अलीगढ में चलाया गया । इन्होंने 1877 ई में अलीगढ में ' आंग्ल–मुस्लिम स्कूल' (जिसे मोहम्मदन ऐंग्लों ओरिएण्टल स्कूल भी कहा जाता है) की स्थापना की 1920 ई क यही केन्द्र अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में सामने आया।

भारत के वायसराय

❖ **लॉर्ड कैनिंग (1856 ई0–1862ई0)** -- लॉर्ड कैनिंग भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अन्तिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश सम्राट के अधीन नियुक्त भारत का पहला वायसराय था।
इसके समय में ही 1857 का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विद्रोह हुआ तथा 1858 का भारतीय परिषद अधिनियम भी पारित हुआ न्यायिक सूधारों के अन्तर्गत कैनिंग ने 'इण्डियन हाई कोर्ट एक्ट' '1861 ई द्वारा मम्बई, कलकाता, मद्रास में एक एक उच्च न्यायालय की स्थापना की । कलकता, बम्बई और मद्रास विश्वविद्यालय की स्थापना (1857ई0)1861 का भारतीय परिषद् अधिनियम कैनिग के समय ही पास हुआ।

New G.K. एवं Latest Vacancies की जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे Whatsapp Broadcasting Group से जुड़ने के लिए हमें Add me लिख कर मैसेज भेजे। 9828710134, 9982234596 www.dhingraclasses.in

Preview from Notesale.co.uk Page 15 of 21

सुधार लाया गया। खिलाफत आन्दोलन(1920–21ई) – एवं गांधीजी के सत्याग्रह असहयोग आन्दोलन (1920) की शुरूआत तृतीय अफगान युद्ध आदि महत्वपुर्ण घटनाएं चैमसफोर्ड के समय में हुई

- **लॉर्ड रीडिंग(1921–1926ई)**– इसके समय समय में 1928 ई में साइमन कमीशन' भारत आया तथा 6 अप्रैल 1930 मे सविनय अवज्ञा आन्दोलन गांधीजी द्वारा प्रारम्भ किया गया। इसके समय में ही 1930 ई में लन्दन में पथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। 5 मार्च 1930 को गांधी–इरविन समझोते पर हस्ताक्षर किये गये और साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन को वापस लिया गया।
- **लॉर्ड विलिंगटन(1936–1944ई)** – इसके समय में 1 सितम्बर से 1931 तक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन लन्दन में हुआ ।इस सम्मेलन में गांधी जी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया। महात्मा गांधी एवं अम्बेडकर के बीच 25 सितम्बर 1932 को पूरा समझौता हुआ । अगस्त 1932 मे रैम्जे मैकडोनाल्ड ने प्रसिद्व 'साम्प्रदायिक अधिनिर्णय' की घोषाणा की तथा दिसम्बर 1932 में विलिगंटन के समय में ही तृतीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन लन्दन में हुआ।
- **लॉर्ड लिनलिथगो (1936–1944ई)** – इसके समय में पहले चुनाव कराये गये चुनाव के परिणाम राष्ट्रीय कांग्रेस के पक्ष में रहे । 1 सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारम्भ इन्हीं के समय में हुआ । अप्रैल 1939 में सुभाष चन्द्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक नामक एक नई पार्टी का गठन किया ।तथा लिनलिथगो के समय मे ही पहली बार 1940 ई में पाकिस्तान की मांग की गयी। 8 अगस्त 1940 को प्रसिद्ध 'अगस्त प्रस्ताव ' अग्रेंजों द्वारा लाया गया। 1942 ई में 'क्रिप्स मिशन' भारत आया तथा 1942 मे ही कांग्रेस ने भारत छोडो आदोलन प्रारम्भ किया।
- **लॉर्ड वेवेल** (1944–1947ई) – वेवेल के समय में 1945 ई में शिमला समझौता हुआ, कैबिनेट मिशन1946 ई में भारत आया। तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमत्री क्लीमेण्ट एटली ने भारत को जून1948 के पहले स्वतन्त्र करने की घोषणा की ।
- **लॉर्ड माउण्टबेटन (मार्च 1947 से जून1948)** – भारत का अन्तिम वायसराय तथा स्वतंन्त्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल जिसने 3 जून 1947 को यह घोषणा की कि भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत का विभाजन ही समस्या का हल है। भारतीय स्वतन्त्रता विधेयक ब्रिटिश संसद मे जुलाई 1947 में प्रधानमंत्री एटली द्वारा प्रस्तुत किया गया। विधेयक के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतन्त्र राष्ट्रों के निर्माण की बात कही गयी।
- **चक्रवर्ती राजगोपालचारी (1948–1950)** – लॉर्ड माउण्टबेटन की वापसी के बाद 21 जून 1948 को चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारत के गवर्नर जनरल बनाये गये । वे स्वतंन्त्र भारत के प्रथम भारतीय व अन्तिम गवर्नर जनरल थे। इनके बाद भारत के संविधान के अनुसार शासन प्रमुख राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री बनने लगे ।

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885 ई0)** – कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. मे ए0 आ0 ह्यूम द्वारा की गयी थी जो कि एक सेवानिवृत अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी थे। इसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर 1885 ई में बम्बई में हुआ। जिसकी अध्यक्षता व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने की। 1885 ई में कांग्रेस की स्थापना के बाद अगले बीस वर्षो तक इस पर ऐसे गुट का प्रभाव था जिसे 'उतरदायी गुट' कहा जाता था। उदारवादियों के प्रमख नेता थे दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी फिरोजशाह मेहता ,गोविन्द रानाडे ,गोपालकृष्ण गोखले ,मदन मोहन मालवीय आदि 1905 ई से 1919 ई तक के चरण को नव राष्ट्रवाद अथवा गरमपंथियों के उदय का काल माना जाता है। कांग्रेस के गरमपंथी नेताओं में प्रमुख थे – बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपतराय (लाल,बाल,पाल) अरविन्द घोष आदि ।
- **बंगाल का विभाजन** (1905)-- बंगाल में राष्ट्रीय चेतना को नष्ट करने के उद्देश्य से लॉर्ड कर्जन द्वारा 16 अगस्त 1905 ई को बंगाल का विभाजन कर दिया गया।
- **स्वदेशी व स्वराज(1905 ई तथा 1906 ई)--** लाल, बाल, पाल और अरविन्द घोष के प्रयासों के कारण कांग्रेस ने स्वदेशी व स्वराज की मांग की । 1905 ई के बनारस अधिवेशन में गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता में कांग्रेस ने स्वदेशी की मांग रखी। 1906 ई.में कलकता अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने स्वराज की मांग रखी।
- **मुस्लिम लीग की स्थापना (1906ई)** –इसके संस्थापकों में आगा खाँ, नवाब सलीमुल्ला और नवाब मोहसिन–उल–मूल्क प्रमुख थे जिन्होंने 1906 ई. में इसकी स्थापना की । मुस्लिम लीग की स्थापना प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों की निष्ठा बढ़ाना, मुसलमानों के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करना तथा कांग्रेस के प्रति मुसलमानों में घृणा उत्पन्न करना था।
- **कांग्रेस का सूरत अधिवेशन (1907ई.)--** इस अधिवेशन में कांग्रेस स्पष्ट रूप से नमपंथियों व गरमपंथियों में विभाजित हो गयी थी। विवाद का केन्द्र रासबिहारी घोस थे जिन्हें इस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया था।
- **दिल्ली दरबार (1911ई) --** इंग्लैण्ड के सम्राट जॉर्ज पंचम एवं महारानी मेरी के स्वागत में 1911 ई में दिल्ली मे एक भव्य दरबार का आयोजन किया गया। इस दरबार मे बंगाल विभाजन को रद्द करने तथा भारत की राजधानी को कलकता से दिल्ली स्थानान्तरित करने की घोषणा हुई ।

Preview from Notesale.co.uk Page 17 of 21
DHINGRA CLASSES